By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lectutre-1

Topic - Criticisms of Pressure Groups

Class - B.A. Degree - I (Sub.)

Subject - Political science

Date - 30 sept., 2020

By Rahulkumar Jha.

दबाव-समूहों की आलोचनाएँ :-

एक समय था जब दबाव समूहों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता था। राजनीति के विद्वतजन और सामान्य जन दोनों की दृष्टि में दबाव-समूह उपहास के पात्र थे। कार्ल जे. फ्रेडरिक का कहना है कि उन्हें ऐसी शैतानी शक्ति माना जाता था, जो आधुनिक लोकतंत्र एवं प्रतिनिधि शासन को धीरे-धीरे काट रही हो। 'लॉबी' शब्द का अर्थ दोष, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी आदि के समूह से समझा जाता था।

शनैः शनैः इन दबाव-समूहों को सामाजिक मान्यता मिलती गई और

आज इन्हें आवश्यक बुराई न मानकर सभ्य जैस्या एवं राजनीतिक जीवन का एक तत्व माना जाता है। लेकिन, आज भी वे आलोचना से परे नहीं है। दबाव-समूह प्राय! जिन भ्रष्ट और अनैतिक तत्वों का सहारा लेते है, वे राष्ट्र के चरित्र पर तथा किसी भी राजनीतिक तथा सामाजिक ढाँचे पर स्वच्छ प्रभाव नहीं डालते।

संयुक्त राज्य अमेरिका में लॉबिइंग की प्राय! दो आलोचनाएँ की जाती है- प्रथम, इनके द्वारा अपनाए जाए तरीके अनैतिक होते है। द्वितीय, ये लॉबियां राष्ट्र के विभिन्न हितों का सही प्रतिनिधित्व नहीं करती। लॉबिइंग से जनतांत्रिक मूल्यों पर जिस तरह का आघात पहुँचता है, इसका स्पष्टीकरण सीनेटर पॉल डगलस की इस घोषणा

से होता है, जिसमें उन्होंने कहा था कि वह 2.50 डॉलर से अधिक का उपहार स्वीकार नहीं करेगा। इससे यह स्पष्ट है कि दबाव-समूहों द्वारा सीनेटरों को अपने पक्ष में करने के लिए भारी धनराशि के उपहार दिए जाते हैं या उन्हें भारी रिश्वत या घूस दी जाती है।

अमेरिकी कांग्रेस के सदस्य अनेक बार ऐसे हित-समूहों द्वारा खरीद लिए जाते हैं। उन्हें बड़े-बड़े उपहार प्राप्त कोई राजनीतिक अभियान चलाने के लिए चंदे के रूप में दिए जाते हैं। एक सीनेटर के रूप में रिचर्ड निक्सन ने कैलीफोर्निया के हित-समूहों से 18,000 डॉलर अपने व्यक्तिगत कोष हेतु लिए थे। भारत में भी टाटा-हित समूह, बिड़ला-हित समूह आदि द्वारा विधायकों तथा बड़े पदाधिकारियों को इसी तरह पक्ष में किया जाता है।